

|    |   |    |
|----|---|----|
| 64 | वर्णनेडा स्तवः स्तोत्रं स्तुतिर्नुतिः ॥ २६९ ॥             | २८ |
| 65 | स्त्राया प्रशंसार्थवादः                                   | २८ |
| 66 | सा तु मिथ्या विकल्थनम् ।                                  | २८ |
| 67 | जनप्रवादः कौलीनं विगानं वचनीयता ॥ २७० ॥                   | २८ |
| 68 | स्यादवर्ण उपक्रोशो वादो निःपर्यपात्परः ।                  | २८ |
| 69 | गर्हणा धिक्क्रिया निन्दा कुत्सा क्षेपो नुगुप्सनम् ॥ २७१ ॥ | २८ |
| 70 | आक्रोशाभीषङ्गाक्षेपाः शापः                                | २८ |
| 71 | स क्षारणा स्ते ।  | २८ |
| 72 | विरुद्धशंसनं गालि-  | २८ |
| 73 | राशीर्मङ्गलशंसनम् ॥ २७२ ॥                                 | २८ |
| 74 | श्लोकः कीर्तिर्यशो ऽभिख्या समाज्ञा                        | २८ |
| 75 | रुशती पुनः ।  | २८ |
| 76 | अशुभा वा-   | २८ |
| 77 | कशुभा कल्या   | २८ |
| 78 | चर्चरी चर्मटी समे ॥ २७३ ॥                                 | २८ |
| 79 | यः सनिन्द उपालम्भस्तत्र स्यात्परिभाषणम् ।                 | २८ |
| 80 | आपृच्छालापः संभाषा-                                       | २८ |
| 81 | नुलापः स्यादनुकुर्वचः ॥ २७४ ॥                             | २८ |

64. 65. Lob (9 W.). — 66. Unverdientes Lob. — 67. Böses Gerücht (4 W.). — 68. 69. Tadel (11 W.). — 70. Fluch (4 W.). — 71. Auf den Beischlaf bezüglicher Fluch. — 72. Verfluchung. — 73. Segen. — 74. Ruf, Berühmtheit (5 W.). — 75. 76. Unglückverheissend (Rede). — 77. Glückverheissend (Rede). — 78. Freudenruf (2 W.). — 79. Ernste Zurechtweisung. — 80. Anrede (2 W.). — 81. Wiederholung.